PRAVIN VINOD TIWARI
EDEN HIGH SCHOOL

"मेरे सपनों की मिठी नदी"

निबंध स्पर्धा

मिठी नदी साफ, सुरक्षित, प्रदुषणमुक्त व सुंदर करूया

किरीट सोमैया, माजी खासदार — राजेश सिंह, अध्यक्ष, भाजयुमो

विषय :- "मेरे सपनो की मीठी नदी" मुंबई को बचाओ

"मीठी नदी को अंग्रेजो ने 1856 में जन्म दिया। मीठी नदी बिहार तलाब से माहीम खाड़ी तक जाती है। बिहार, तुलसी, पवई जब ये तीनो तलाब अपने पेट को भरकर ऊपर बहती है। तो सारा पानी मीठी नदी के रूप में परिवर्तीत हो जाता है। जो विशाल काय धारण करती है। समस्त क्षेत्र को जल मग्न कर देती है। अंग्रेजो ने मीठी नदी के ऊपर एक पाइप लाईन का निर्माण किया है। उस पाइप लाईन की देखभाल के लिए उन्होंने ट्राली लाईन बनाया है। जो वेलन्ना तक जाती है।"

"जहाँ तक हम जानते है कि जल निकासी के लिए ही मीठी नदी का निर्माण ब्रिटिश सरकार ने किया था। आज भी वह नदी अपना कार्य कर रही है। लेकिन वर्तमान समय में मीठी नदी के आस-पास रहनेवाले लोग उसमे अपना कूड़ा-कचरा प्लास्टिक की थैलिया इत्यादि फेकते है। कई लोग शौचालय का पाइप और गटर मीठी नदी की ओर कर दिये है। जिससे इसका गंदा पानी नदी में जाता है। मीठी नदी के बगल में रहनेवाले बंगारवाले लोग अपना कूड़ा-कचरा उसमे फेकते है। ऑयल मिक्स करनेवाले अपना ऑयल इस नदी में फेक देते है। इससे यदि कभी कोई यदि उसमे माचिस की तीली फेक दे तो आग लग सकती है। एयरपोर्ट ऑथोरेटी ने इस नदी को तीनो ओर से 90° तक मोड़ दिया है। बिना कोई साइन्टीफीक स्टडी किए। लोगों ने इसके बगल घर उद्योग आदि बना दिये है। जिसके कारण नदी का पानी नही पाता। इसके कारण यदि पानी बाहर आ गया तो बाढ आने की संभावना रहती है। महाराष्ट्र सरकार अपने डेवलापमेन्टल प्लान में कई

जगह मीठी नदी को और न नाला और जमीन दिखाया है। औसतन इसकी चौड़ाई लगभग ६० मीटर ही रह गई है। यह नदी न होकर बल्कि यह नाला का रूप धारण कर चुकी है। लोगों ने उसके ऊपर बहुत अत्याचार किया है।"

"इन्हीं सभी उपर्युक्त कारणों से २६ जुलाई २००५ को बारिश के कहर ने मुंबई-वासियों के साथ-साथ पूरे महाराष्ट्र व देश को हिलाकर रख दिया था। माना जा रहा था कि इस आपदा से अकेले मुंबई को ही पंद्रह हजार करोड़ रुपये का नुकसान पहुचा था। इसके अलावा यातायात, संचार, बिजली, मकानों तथा वाहनों को भारी क्षति पहुची थी। यह तबाही ५० प्रतिशत प्राकृतिक थी और ५० प्रतिशत मनुष्यनिर्मित थी। अब तो जब भी भारी वर्षा होगी। तब लगभग यही दृश्य हर बार देखने को मिलेगा क्योंकि पानी निकलने के साधन नाले सँकरे बना दिए गए है। और नालियाँ ढक दी गई है। या पाट दी गई है। उसमें पानी निकल ही नहीं पा रहा है।

माहिम खाड़ी को इस नदी का "मुख" कहते है। यदि हम नदी के मुख को छोटा कर देंगे तो सारा पानी कहा जाएगा। ये सारा पानी बाहर आ सकता है और इसके कारण बाढ़ भी आ सकती है।"

"यदि समय रहते हम और हमारी सरकार नहीं सजग हुई तो आगे इससे भी भयंकर तबाही का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए हमारे सपनों की मीठी" के किनारे हो रहे अनाधिकृत बांधकाम पर रोक लगाई जाए किनारे-किनारे न्यारे-न्यारे पेड़ लगाएँ जाएँ। नदी नाले के पास ज्यादा से ज्यादा जगह छोड़नी चाहिए मानसून के चार महीने पहले से ही सातत्य "मीठी नदी" और शहर के नालों का बकायदा ढंग से सफाई की जानी चाहिए। नागरिकों को अपने कर्तव्यों का सही रूप से पालन करना चाहिए। उन्हें भी मुंबई को हरा-भरा बनाने में सहयोग देना चाहिए।"

हमे इस नदी को इसके नाम के समान बनाना चाहिए। नदी को हम माता कहते है। उसे माता के तुल्य बनाना चाहिए। हमे उसे ऐसा बनाना चाहिए कि लोग उसका पानी पी सके। सरकार को उसे वहां पिकनीक स्पॉट बनाना चाहिए। ताकि लोग वहां घुमने आ सके। उसके आस-पास रहनेवालो को वहां से हटाना चाहिए। इस प्रकार हम मीठी नदी को बचाकर मुंबई को बचा सकते है पानी उपलब्ध करवाकर अनेक कामो में इस्तेमाल कर सकते है।

आओ हम सब को मिलकर कसम खाना है।
मीठी नदी को बचाना है।
उसे उसके नाम जैसा बनाना है।
अनेक इस्तेमाल को लाना है।

PRAVIN VINOD TIWARI.
STD IXth. A.
EDEN HIGH SCHOOL.